CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं. ३०६
११३२

बाल - कवितावलि

6·1
V

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृत-प्रचार पुस्तकमाला सं० ४१

बाल-कवितावलिः

(हँसते खेलते संस्कृत)

सं० ३०६

प्रथम भाग

रचयिता—
श्री वासुदेव द्विवेदी वेदशास्त्री साहित्याचार्य
(सम्पादक—संस्कृत-प्रचार पुस्तक माला)

११३२

सार्वभौम संस्कृत-प्रचार कार्यालय
वा रा ण सी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक—

सार्वभौम संस्कृत-प्रचार कार्यालय

वा रा ण सी ।

❀

द्वितीय आवृत्ति एक हजार

मूल्य—पचास पैसा

❀

मुद्रक—

बैजनाथ प्रसाद

कल्पना प्रेस

रामकटोरा रोड, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवश्यक निवेदन

ए० ३०६

प्रस्तुत पुस्तक "हँसते-खेलते संस्कृत पुस्तक माला" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है जो अपने ढंग की बिलकुल नवीन और निराली पहली रचना है। इसमें इसके नामानुरूप ही बालकों को बिना परिश्रम के, मनोरञ्जन के साथ, हँसते-खेलते संस्कृत सिखाने की दृष्टि से ऐसी कवितायें तथा तुकबन्दियाँ प्रकाशित की गई है जिनमें पहले संस्कृत के वाक्य हैं और फिर उनका हिन्दी-अनुवाद है और दोनों को मिलाकर बांचने से एक छन्द बन जाता है। इस प्रकार यह पुस्तक जहाँ हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी अनुवाद सीखने-सिखाने मे सहायक है वहीं कविता पढ़ने का भी आनन्द देती है। इन कविताओं की एक विशेषता यह भी है कि यदि इनमे से केवल संस्कृत पदों को अलग करके पढ़ा जाय तो वह संस्कृत कविता हो जाती है, यदि हिन्दी पदों को अलग करके पढ़ा जाय तो हिन्दी कविता हो जाती है और यदि मिलाकर पढ़ा जाय तो मिश्रित कविता हो जाती है। इस प्रकार इस पुस्तक से संस्कृत, हिन्दी और मिश्रित कविताओं के पढ़ने का एक साथ आनन्द प्राप्त हो सकता है और बालकों में अनायास ही इस पुस्तक के माध्यम से संस्कृत पढ़ने की अभिरुचि उत्पन्न की जा सकती है।

9432

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशा है, इन सभी बातों पर ध्यान देते हुए समस्त अभि-भावक, अध्यापकगण तथा संस्कृत-प्रचार के इच्छुक जन अपने बाल-बच्चों तथा विद्यार्थियों के लिए इस पुस्तक का अध्ययन अनिवार्य करेंगे और इस प्रकार संस्कृत प्रचार में सहायता देकर हमें अनुगृहीत करेंगे।

१५ जनवरी १९६८ ई० विनीत—
वाराणसी। रचयिता

शुद्धिपत्र

पाठकों से निवेदन है कि कृपया पहले निम्नलिखित अशुद्धियों को शुद्ध कर लें तत्पश्चात् पुस्तक पढ़ने का आरम्भ करें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
४	१०	वहती	वहति
१३	७	मिलती	मीलति
२६	१४	निर्वायिम	निर्वापय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाल-कवितावलिः

प्रार्थना

हे दयानिधे ! हे दयाधाम !
हे दयानिधे ! हे दयाधाम !

वीरा भवेम हम वीर बनें
धीरा भवेम हम धीर बनें
शिष्टा भवेम हम शिष्ट बनें
सभ्या भवेम हम सभ्य बनें ।

सततं पठेम हम सदा पढ़ें
सततं लिखेम हम सदा लिखें
सत्यं वदेम हम सच बोलें
सुखिनो वसेम हम सुखी रहें ।

तुभ्यं नमोऽस्तु तुमको प्रणाम
हे दयानिधे हे दयाधाम !

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिलाषा

वीर-बालका वयम्
वीर बाल हम सभी
वीर-बालका वयम्
वीर बाल हम सभी

सागरं समुत्तरेम सागर को पार करें
गगनतले उत्पतेम आसमान में उड़ें।

भूतले जमीन पर
पर्वते पहाड़ पर
उत्सवे उमंग में
संग्रामे जंग में

सर्वतो वयं जयेम सब जगह विजय करें।
निर्भयाः सदा भवेम सर्वदा निडर रहें।

नो कदापि वित्रसेम
त्रस्त हों नहीं कभी।
वीर-बालका वयम्
वीर बाल हम सभी।

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टप् टप्, गप् गप्

निपतति जम्बूः टप् टप्
गिरती जामुन टप् टप्
बालः खादति गप् गप्
लड़का खाता गप् गप्।
वायुः प्रवहति हर् हर्
हवा बह रही हर् हर्
पत्रं निपतति खर् खर्
पत्ता गिरता खर् खर्।
विहगो ब्रूते चुन् चुन्
चिड़िया बोले चुन् चुन्
भ्रमरो गुञ्जति गुन् गुन्
भँवरा गूँजे गुन् गुन्
गन्त्री गच्छति धक् धक्
गाड़ी जाती धक् धक्
बालः पश्यति टक् टक्
लड़का देखे टक् टक्

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तमान काल के वाक्य

शिशुः स्वपिति बच्चा है सोता
कृषकः वपति कृषक है बोता
अजा चरति बकरी है चरती
में में कुरुते में : में करती ।

सर्पः दशति साँप डँसता है
मशकः दशति मशक डँसता है
वायुः चलति हवा चलती है
वायुः वहति हवा बहती है ।

जलं वहती पानी बहता है
कुम्भः स्रवति घड़ा चूता है
अग्निः ज्वलति आग जलती है
दालिः गलति दाल गलती है ।

रामः पठति राम पढ़ता है
श्यामः लिखति श्याम लिखता है
शुकः पठति सुग्गा पढ़ता है
शिशुः रटति बच्चा रटता है ।

\+ \+ \+

गीता गायति गीता गाती
कमला खादति कमला खाती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विमला रोदिति विमला रोती
सुषमा शेते सुषमा सोती।

शीला खेलति शीला खेल रही है
लीला धावति लीला दौड़ रही है
मित्रा पश्यति मित्रा देख रही है
कृष्णा पृच्छति कृष्णा पूछ रही है।

\+ \+ \+

बालकाः खेलन्ति लड़के खेलते हैं
बालकाः धावन्ति लड़के दौड़ते हैं
बालकाः पृच्छन्ति लड़के पूछते हैं
बालकाः क्रीडन्ति लड़के खेलते हैं।

घोटका धावन्ति घोड़े दौड़ते हैं
कुक्कुरा बुक्कन्ति कुत्ते भूँकते हैं
कोकिलाः कूजन्ति कोयल कूजते हैं
षट्पदा गुञ्जन्ति भौंरे गूँजते हैं।

नर्तका नृत्यन्ति नर्तक नाचते हैं
गायका गायन्ति गायक गा रहे हैं
दर्शकाः पश्यन्ति दर्शक देखते हैं
यात्रिणः गच्छन्ति यात्री जा रहे हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिनचर्या

वयं बालकाः सदा पठामः
हम बालक हर दम पढ़ते हैं
वयं बालकाः सदा लिखामः
हम बालक हर दम लिखते हैं
वयं बालकाः सदा चलामः
हम बालक हर दम चलते हैं
वयं बालकाः सदा मिलामः
हम बालक हर दम मिलते हैं

\+ \+ \+

वयं प्रभाते उत्तिष्ठामः
हम सब प्रातः उठ जाते हैं
ततो नित्यकर्तव्यं कुर्मः
तब हम नित्य-क्रिया करते हैं
ततो वयं पठितुं गच्छामः
तब हम सब पढ़ने जाते हैं
सायं पुनः समागच्छामः
पुनः शामको आ जाते हैं।

\+ \+ \+

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुक्त्वा पीत्वा मन्दं मन्दं
खाकर पीकर धीरे धीरे
पठितुं वयं व्रजामः
पढ़ने हम जाते हैं
तत्र पठित्वा पाठं सायं
वहाँ पाठ पढ़ संझा को
गेहम् आगच्छामः
घर पर आ जाते हैं।

घटी (घड़ी)

घटी मदीया ब्रूते टन् टन्
घड़ी हमारी बोले टन् टन्।
चलति तदीया सूची सततं
चलती उसकी सूई हर दम।
नहि कदापि अवकाशं लभते
नहीं कभी भी छुट्टी पाती।
सदा मदीयां सेवां कुरुते
सदा हमारी सेवा करती।

—:※:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गन्त्री (गाड़ी)

गन्त्री गच्छति	गाड़ी जाती
गन्त्री गच्छति	गाड़ी जाती
अग्रे गच्छति	आगे जाती
पृष्ठे गच्छति	पीछे जाती
उच्चैः गच्छति	ऊँचे जाती
नीचैः गच्छति	नीचे जाती

गन्त्री गच्छति
गाड़ी जाती ।

मन्दं गच्छति	धीरे जाती
शीघ्रं गच्छति	जल्दी जाती
वक्रं गच्छ त	टेढ़ी जाती
सरलं गच्छति	सीधी जाती

गन्त्री गच्छति
गाड़ी जाती ।

झक् झक्	झक् झक्
गानं गायति	गाना गाती
धक् धक्	धक् धक्
नादं कुरुते	शोर मचाती

गन्त्री गच्छति
गाड़ी जाती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंगारं खादन्ती कोयला खाती
जलं पिवन्ती पानी पीती
धूमं ददती धूआँ देती
रजः किरन्ती धूल उड़ाती

गन्त्री गच्छति
गाड़ी जाती।

मध्ये मध्ये तिष्ठति बीच बीच में रूकती
यदा कदाचित् युध्यति कभी कभी लड़ जाती
यदा कदाचित् निपतति कभी कभी गिर जाती
पुनः उपरि उत्तिष्ठति फिर ऊपर उठ जाती

गन्त्री गच्छति
गाड़ी जाती।

शीते वा उष्णे वा सर्दी या गर्मी में
सदा सेवते हरदम सेवा करती
दिवसं वा रजनीं वा दिन हो या रजनी हो
अवकाशं नो लभते छुट्टी कभी न पाती

गन्त्री गच्छति
गाड़ी जाती।

—:※:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्नू मुन्नू

एतौ बालौ	ये दो लड़के
"चुन्नू मुन्नू"	चुन्नू मुन्नू
सदा खेलतः	सदा खेलते
इतो धावतः	इधर दौड़ते
ततो धावतः	उधर दौडते
वारं वारं पततः	बार बार गिर जाते
यदपि लभेते	जो कुछ पाते
सर्वं वदने क्षिपतः	सब कुछ मुँह में रखते
सर्पं सर्पं चलतः	सरक सरक कर चलते
सततं हसतः	हरदम हँसते ।
किन्तु बुभुक्षा यदा बाधते	किन्तु भूख जब लगती
तारं रुदतः	खूब जोर से रोते
मातुः सविधे ब्रजतः	माँ के पास पहुँचते
सम्यग् दुग्धं पीत्वा	खूब दूध पी
मुदितौ भवतः	खुश हो जाते
पुनः खेलितुं ब्रजतः	पुनः खेलने जाते
सर्वं मुदितं कुरुतः	सबको खुश कर देते ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोमाता

एषा मम गोमाता
यह मेरी गोमाता
कीदृक् अस्या रूपम् कैसी इसकी सूरत
कीदृक् सरल-स्वभावः कैसा सरल स्वभाव
मधुरे अस्या नयने मीठी इसकी आँखें
करुणाभरितो रावः दर्द भरी आवाज
अस्या आदरभावः
इसका आदर करना
सर्व - सुमङ्गल - दाता
सबका मङ्गल दाता, एषा······
नित्यं प्रातः गच्छति रोज सबेरे जाती
सायं पुनरागच्छति संझा को फिर आती
दुग्धं सदा प्रयच्छति दूध हमेशा देती
मनो मदीयं हरते मेरा मन हर लेती
अस्या सुन्दर-वत्सः
इसका सुन्दर बछड़ा
सर्वजनानां त्राता
सब लोगों का त्राता, एषा······

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चटका (फरगुद्दी)

कियती चपला	कितनी चंचल
एषा चटका	यह फरगुद्दी
चूँ चूँ कुरुते	चूँ चूँ करती
चीं चीं कुरुते	चीं चीं करती
मुहुर्मुहुः उड्डयते	बार बार उड़ जाती
पुनरागच्छति[1]	फिर आ जाती
किञ्चिद् विरमति	छन भर रुकती
जातु कूर्दते	कभी कूदती
परितः पश्यति	चारों ओर निरखती
सदा शङ्किता	हरदम शङ्कित रहती
सततं भीता	हरदम डरती
तृणं मुखे आनयते	तिनका मुख में लाती
सुन्दर नीडं रचयति	सुन्दर नीड़ बनाती
सुखिता समयं गमयति	सुख से समय बिताती ।

———

१—सन्धि—पुनः आगच्छति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विडालः (बिलार)

अयं विडालः	यह बिलार
मूषक-वैरी	चूहों का दुश्मन
मन्दं गच्छति	धीरे चलता
मौनं तिष्ठति	चुपके रहता
मध्ये मध्ये	बीच बीच में
नयनं मिलती	आँख मूँदता
किन्तु मूषकम्	पर चूहा को
दृष्ट्वा धावति	देख दौड़ता
धृत्वाऽक्रामति[१]	पकड़ दबाता
मुखे गृहीत्वा	मुँह में लेकर
परितः पश्यन्	चारो ओर निरखता
शीघ्रं शीघ्रं	जल्दी जल्दी
निभृते गच्छति	शून्य जगह में जाता
मुदितः खादति	खुश हो खाता ।

१—सन्धि—धृत्वा आक्रामति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूषिका (चूहिया)

आगता आगता	आ गई आ गई
मूषिका आगता	चूहिया आ गई
वासरो या निशा	रात हो या दिवस
धावमाना इतः	इस तरफ दौड़ती
धावमाना ततः	उस तरफ दौड़ती
शङ्किता सर्वदा	चौंकती हर घड़ी
पादयोरुत्थिता[१]	पैर पर हो खड़ी
ईक्षमाणाऽभितः[२]	सब तरफ झाँकती
आददाना कणम्	एक दाना लिये
कूर्दमाना मुहुः	कूदती फाँदती
क्वापि लीना पुनः	फिर कहीं छिप गई
विद्रुता वा क्वचित्	या कहीं भाग गई
निद्रिता वा क्वचित्	या कहीं सो गई।
आगता आगता	आ गई आ गई
मूषिका आगता	चूहिया आ गई।

१—पादयोः उत्थिता। २—ईक्षमाणा अभितः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पिपीलिका (चींटी)

कियती तन्वी	कितनी पतली
कियती सरला	कितनी सीधी
कियती लघ्वी	कितनी हलकी
कियद्-दुर्बला	कितनी दुबली
कियती ह्रस्वा	कितनी छोटी

सा पिपीलिका

वह चींटी है ?

किन्तु सर्वदा	लेकिन हरदम
श्रमं विधत्ते	मिहनत करती
दूरं दूरं गच्छति	दूर दूर तक जाती
चलति सर्वदा	हरदम चलती
सततं धावति	सदा दौड़ती
देश-देशतः	जगह जगह से
खाद्य वस्तु आनयते	खाने का सामान लेआती
विले निधत्ते	विल में रखती
समये समये खादति	समय समय पर खाती
सुखिता जीवति	सुख से जीती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कियत् उत्तमम्	कितना उत्तम
कियत् निर्मलम्	किनता निर्मल
कियत् सुन्दरम्	कितना सुन्दर
कियत् निर्भरम्	कितना निर्भर
इदं जीवनम्	यह जीवन है ?
अस्मिन् क्षुद्र शरीरे	इस छोटे से तन में
कियत् साहसम्	कितना साहस
कियत् पौरुषम्	कितना पौरुष
कियती शक्तिः	कितनी ताकत
कियान् आत्मविश्वासः	कितना निजी भरोसा
आश्चर्यम्, आश्चर्यम्	अचरज है अचरज है ?
हे पिपीलिके	हे पिपीलिका
धन्यतमा असि	धन्य धन्य हो
चिरंजीविनी	बहुत दिनों तक जीओ,
नीति-धर्मयोः	नीति-धर्म का
विश्वं पाठं शिक्षय	जग को पाठ सिखाओ
श्रम-पौरुषयोः	श्रम पौरुष का
सर्वं मार्गं दर्शय	सबको राह दिखाओ
नमो नमस्ते	नमस्कार है,नमस्कार है ।

—: ❀ :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोचारकाः (चरवाहे)

प्रत्यूषे आवासात्	खूब सबेरे घर से
भुक्त्वा पीत्वा	खाकर पीकर
मिलिताः सर्वे	सब मिल जुलकर
लघवो लघवः	छोटे छोटे
तथा युवानः	और सयाने
गोपा बालाः	ग्वाल बाल सब
चारयन्ति गाः	गाय चराते ।

\+ + +

हस्ते लकुटी	कर में लाठी
स्कन्धे एकं वस्त्रम्	एक वस्त्र कन्धे पर,
किञ्चित्-सक्तुम्	थोड़ा सत्तू
अल्पं गुडं गृहीत्वा	थोड़ा सा गुड़ लेकर
जातु भ्रमन्तः	कभी घूमते
जातु शयानाः	कभी लेटते
जलं पिबन्तः	पानी पीते
संगीतं गायन्तः	गाना गाते
चारयन्ति गाः	गाय चराते ।

\+ + +

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदा धेनवः	जब सब गायें
क्षेत्रे-क्षेत्रे गत्वा	खेत-खेत में जाकर
हरितं शस्यम्	हरे फसल को
चरितुं लग्ना	चरने लगतीं
नो मन्यन्ते	नहीं मानतीं
न निवर्तन्ते	नहीं लौटती
तदा चारकाः	तब चरवाहे
दण्डं धृत्वा	डंडा लेकर
धावं धावं	दौड़ दौड़ कर
हे हे कृत्वा	हे हे करके
हो हो कृत्वा	हो हो करके
त्वरितं गत्वा	झट पट जाकर
हत्वा हत्वा	मार मार कर
गालि दत्वा	गाली देकर
निवर्तयन्ते धेनूः	गायों को लौटाते
चारयन्ति गाः	गाय चराते।

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varaṇasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूर्योदय

सूर्यः उदयति
सूरजं उगता
तिमिरं नश्यति
तिमिर[1] भागता ।

मनुजे मनुजे	मनुज मनुज में
हृदये हृदये	हृदय हृदय में
जीवे जीवे	जीव जीव में
कुसुमे कुसुमे	फूल फूल में
नवं यौवनं	नई जवानी
नवा चेतना	नई चेतना
नवः प्रसादः	नव प्रसन्नता
नव-पराक्रमः	नया पराक्रम

परितो विलसति
चारों ओर चमकता
सूर्यः उदयति
सूरज उगता ।

—:※:—

१—अँधेरा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्षा

मेघः गर्जति गड़ गड़
बादल गरजे गड़ गड़
करका निपतति पड़ पड़
ओला गिरता पड़ पड़।

वर्षा वर्षति रिम झिम
वर्षा बरसे रिम झिम
विद्युत् विलसति चम चम
विजली चमके चम चम।

सदा दुर्दिनं घोरम्
सदा भयंकर दुर्दिन
सदा तामसं दिवसे
सदा अन्धेरा दिन भर।

गमनाऽगमने कठिने
जाना - आना मुश्किल
सदा प्रस्खलन - भीतिः
सदा फिसलने का डर।

सर्वत्र घटा अतिघोराः
सब ओर घटायें भीषण
सर्वत्र भयंकर — वर्षा
सब ओर भयंकर वर्षा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुद्धः सकलो व्यापारः
सबका सब काम रुका है
भवने भवने जल-चर्चा
घर घर में जल की चर्चा ।

बहवः पन्थानो भग्नाः
बहुतेरे पथ टूटे
बहवोऽपि सेतवो मग्नाः
कितने ही पुल भी डूबे ।

निर्गृहा मानवा जाताः
सब हुये आदमी बे-घर
दुर्लभं भोजनं पानं
खाना-पीना भी दूभर ।

भुवि पानीयं पानीयम्
भू पर पानी ही पानी
सर्वत्र कर्दमः पङ्कः
सब ओर पाँक ओ कीचड़ ।

सर्वत्र पिच्छिला भूमिः
सब ओर धरातल पिच्छिल
निपतन्ति अनेके धड़ धड़
कितने ही गिरते धड़ धड़ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्षा का अन्त

वर्षा	गता
वर्षा	गई ।
जलदा गताः	बादल गये
भेका गताः	मेढक गये
वात्या गता	आँधी गई
विद्युद् गता	बिजली गई
वर्षा	गता
वर्षा	गई ।
गड़ गड़ गतम्	गड़ गड़ गया
तड़ तड़ गतम्	तड़ तड़ गया
टर टर गतम्	टर टर गया
सुषमा नवा	सुषमा नई
वर्षा	गता
वर्षा	गई ।
सलिलं गतम्	पानी गया
पङ्को गतः	कीचड़ गया
परितोऽधुना	सब ओर अब
विमला मही	निर्मल मही
वर्षा	गता
वर्षा	गई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीति-शिक्षा

सत्यं वद धर्मं चर
सच बोलो धर्म करो
पीडित-जन-दुखं हर
दुःखियों का दुःख हरो
क्षुधितानामुदरं भर
भूखों का पेट भरो।

\+ + +

धीरो भव वीरो भव
धीर बनो वीर बनो
शिष्टो भव सभ्यो भव
शिष्ट बनो सभ्य बनो
हृष्टो भव पुष्टो भव
हृष्ट बनो पुष्ट बनो।

\+ + +

शुद्धं पठ शुद्ध पढ़ो
स्वच्छं लिख साफ लिखो
सभ्यो भव सभ्य बनो
शान्तो भव शान्त रहो।

—:※:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदाचार-शिक्षा

नित्यं प्रातः जागृहि — रोज सबेरे जागो
हस्त-मुखं प्रक्षालय — हाथ और मुँह धोओ
शान्त-चेतसा उपविश — शान्त-चित्त हो बैठो
पठितं पाठं चिन्तय — पढ़े पाठ को सोचो।

× × ×

स्नानं कुरु ध्यानं कुरु
स्नान करो ध्यान करो
मधुरं जलपानं कुरु
मीठा जलपान करो
पठने अवधानं कुरु
पढ़ने में ध्यान धरो।

× × ×

हीन-जने मानं कुरु
हीनों का मान करो
दीन-जने दानं कुरु
दीनों को दान करो
जन-जन-सम्मानं कुरु
सबका सम्मान करो।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सावधान

कुसुमानां कलिकाः मा त्रोटय
फूलों की कलियाँ मत तोड़ो।

पुस्तकस्य पत्रं मा मोटय
पुस्तक का पन्ना मत मोड़ो।

वातायन-शीशं मा स्फोटय
जँगले का शीशा मत फोड़ो।

दुष्टैः सम्बन्धं मा योजय
दुष्टों से नाता मत जोड़ो।

× × ×

गच्छति शकटे मा आरोहेः
चलती गाड़ी में मत चढ़ना।

चलतः शकटात् मा अवरोहेः
चलती गाड़ी से न उतरना।

दुष्टैः पुरुषैः सह मा गच्छेः
दुष्ट जनों के साथ न जाना।

कृत्वा कर्म झटिति आगच्छेः
करके काम तुरत आ जाना।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंभव को संभव बनाओ

ऊषर-भुवि शस्यम् उत्पादय
ऊषर में खेती उपजाओ।
गिरि-शिखरे कुसुमानि विकाशय
गिरि के ऊपर फूल खिलाओ।
पाषाणे कोमलताम् आनय
पत्थर में कोमलता लाओ।
आपत्तौ आनन्दं मानय
आफत में आनन्द मनाओ।

× × ×

विना घनं पानीयं वर्षय
विना मेघ पानी बरसाओ।
शत्रु मित्रं सर्वं हर्षय
शत्रु मित्र सबको हरसाओ।
काम - क्रोध - वह्निं निर्वापय
काम क्रोध की आग बुझाओ।
भूमितलं स्वर्गं सम्पादय
भूतल को वैकुण्ठ बनाओ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोटा बालक, बड़ी बड़ी इच्छायें

अहं बालकः	मैं बालक हूँ
लघुः बालकः	लघु बालक हूँ
अल्पाऽवस्था[१]	अल्प अवस्था
दुर्बलः कृशः	दुबला पतला
ह्रस्व-शरीरम्	छोटा सा तन
लघू मदीयौ बाहू	छोटी मेरी बाहें
लघू मदीयौ पादौ	छोटे मेरे पाँव
स्वल्पा शक्तिः	थोड़ी ताकत
स्वल्पा बुद्धिः	बुद्धि जरा सी
किन्तु मदीयं लक्ष्यम्	लक्ष्य हमारा लेकिन्
महाविशालम्	बहुत बड़ा है
महाविशालम्	बहुत बड़ा है।
दूरे दूरे गन्तुम्	दूर दूर तक जाना
आकाशे उड्डयितुम्	आसमान में उड़ना
जातु चन्द्रमानेतुम्[२]	कभी चाँद को लाना
जातु यमेन च योद्धुम्	कभी काल से लड़ना।

१—अल्पा अवस्था। २—चन्द्रम् आनेतुम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्वविजेता भवितुम्	विश्वविजेता होना
जगतो नेता भवितुम्	जग का नेता होना
नूतन-ब्रह्मा भवितुम्	नूतन ब्रह्मा बनना
नूतन-सृष्टिं कर्तुम्	नव संसार सिरजना ।
जगतः पापं हर्तुम्	जग का पाप मिटाना
धर्मराज्यमानेतुम्[१]	धर्मराज्य को लाना
सर्वं सुखिनं कर्तुम्	सब को सुखी बनाना
भुवि स्वर्गं वासयितुम्	भू पर स्वर्ग बसाना ।
सदा मनः कामयते	सदा चाहता मन है
इदं मनः कामयते	यही चाहता मन है
इयं मदीया इच्छा	यही हमारी इच्छा
एषा मम प्रतिज्ञा	यही हमारा प्रण है ।

—: ❀ :—

१—धर्मराज्यम् आनेतुम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मम मनः (मेरा मन)

सुखं मनो मे लभते
मेरा मन सुख पाता।
मनो मदीयं तृप्यति
मन मेरा भर जाता।

विकसित-कुसुमम् खिले सुमन को
नीलं गगनम् नील गगन को
निर्मल-चित्तम् निर्मल मन को
नवं यौवनम् नव यौवन को
श्याम-नीरदं काले घन को
रम्यं वदनं रम्य वदन को
सुन्दर- देहं सुन्दर तन को
दृष्ट्वा दृष्ट्वा देख देख कर

मनो मदीयं हृष्यति
मेरा मन हरषाता।
सुखं मनो मे लभते
मेरा मन सुख पाता॥

—: ० :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रंग-विरंगी दुनियाँ

कश्चित् जीवति	कोई जीता
कश्चित् म्रियते	कोई मरता
कश्चित् रोदिति	कोई रोता
कश्चित् विहसति	कोई हँसता ।
एकः सौधे निवसति	एक महल में रहता
एकः मार्गे शेते	एक सड़क पर सोता
एकः सेवां कुरुते	एक गुलामी करता
एको भवति विजेता	एक विजेता होता ।
कश्चित् योगी	कोई योगी
कश्चित् भोगी	कोई भोगी
कश्चित् पुष्टः	कोई तगड़ा
कश्चित् रोगी	कोई रोगी ।
कश्चित् भूषित-देहः	कोई देह सजाये
कश्चित् नग्न-विनग्नः	कोई देह उघारे
कश्चित् मुंडित-मुण्डः	कोई मूँड मुड़ाए
कश्चित् सज्जित-केशः	कोई केश सजाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देहात का चित्र

भारतं - ग्राम-वासिनो लोकाः
भारत के देहाती लोग

अशनं स्वल्पम्	खाना थोड़ा
मलिनं वसनम्	गन्दा कपड़ा
शुष्कं वदनम्	सूखा मुखड़ा
कथयति दुःखम्	कहता दुखड़ा।
ह्रस्व-कुटीरम्	छोटी कुटिया
भग्ना खट्वा	टूटी खटिया
वक्र-पट्टिका	टेढ़ी पटिया
रोदिति कन्या	रोती बिटिया।
करे तमाखुः	सुर्ती कर में
कलहो गेहे	झगड़ा घर में
चिन्ता हृदये	चिन्ता मन में
कृशता देहे	कृशता तन में।

सततं बाधा सततं रोगः
हरदम बाधा हरदम रोग

भारतग्रामवासिनो लोकाः
भारत के देहाती लोग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिज्ञा

एष मदीयः प्रियतम-देशः   भारत - देशः
यह है मेरा प्यारा देश   भारत देश
एष मदीयः प्रियतम-वेषः   सरलो वेषः
यह है मेरा प्यारा वेष   सादा वेष ।
इयं मदीया दिव्या भाषा   संस्कृत भाषा
यह है मेरी अनुपम भाषा   संस्कृत भाषा
देशधर्मयोः महती आशा   महती आशा
देश-धर्म की महती आशा   महती आशा ।
एतत्सेवां सदा करिष्ये   सदा करिष्ये
इनकी सेवा सदा करूँगा   सदा करूँगा
एतत्कष्टं सदा हरिष्ये   सदा हरिष्ये
इनका संकट सदा हरूँगा   सदा हरूँगा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi